

दोहे

दोहों की व्याख्या

1.

सोहत ओढ़ै पीतु पटु स्याम सलौनै गात।

मनौ नीलमनि-सैल पर आतपु पर्यौ प्रभात॥

शब्दार्थ: सोहत = शोभायमान होते हैं, सुंदर लगते हैं, ओढ़ै = ओढ़े हुए ;पहने हुए, पीतु पटु = पीले वस्त्रा, स्याम = साँवले ;श्रीकृष्ण, सलौनै = लावण्ययुक्त, सुंदर, गात = शरीर, मनौ = मानो, नीलमनि=नीलमणि, सैल = शैल, पर्वत, आतपु = धूप, प्रभात = प्रातःकाल, सवेरा।

व्याख्या: बिहारी लाल जी कहते हैं कि श्रीकृष्ण ने अपने साँवले शरीर पर पीले वस्त्रा धरण किए हुए हैं और वे इन वस्त्रों के कारण अत्यधिक सुंदर लग रहे हैं। उनके रूप-माधुर्य पर दृष्टिपात करके ऐसा प्रतीत हो रहा है, मानो नीलमणि पर्वत पर प्रातःकालीन सूर्य की धूप फैल गई है।

काव्य-सौंदर्य:

भाव पक्ष:

1. श्रीकृष्ण के रूप-माधुर्य का वर्णन किया गया है।
2. स्यामल शरीर पर पीत वस्त्रों की शोभा का अनुपम वर्णन किया गया है।

कला पक्ष:

1. ब्रज भाषा का प्रयोग किया गया है तथा भाषा भावाभिव्यक्ति में सक्षम है।
2. 'पीत पटु' में अनुप्रास अलंकार है।
3. 'मनौ' शब्द के प्रयोग के कारण यहाँ उत्प्रेक्षा अलंकार भी है।
4. दोहा छंद का प्रयोग किया गया है।

2.

कहलाने एकत बसत अहि मयूर, मृग बाघ।

जगतु तपोवन सौ कियौ दीरघ-दाघ निदाघ॥

शब्दार्थ: एकत = एक होकर, बसत = रह रहे हैं, अहि = साँप, मयूर = मोर, मृग = हिरण, बाघ = शेर, जगतु = संसार, कियौ = करना, दीरघ = दीर्घ, दाघ = गर्मी 'दाह'।

व्याख्या: कवि कहते हैं भीषण गर्मी पड़ रही है। इस गर्मी के कारण आपस में शत्रुता भाव रखने वाले जीव भी एक स्थान पर रहने लगे हैं अर्थात् उन्होंने भी वैर - वमैनस्य की भावना भुला दी है। उदाहरणतया साँप और मोर, हिरण और शेर आपस में शत्रुता भुलाकर यहाँ साथ-साथ रह रहे हैं। इस प्रकार सारा संसार तपोवन की भाँति हो गया है।

काव्य-सौंदर्य:

भाव पक्ष:

1. ग्रीष्म ऋतु की भीषणता का सुंदर वर्णन किया गया है।
2. ग्रीष्म ऋतु का जीव-जंतुओं पर पड़ने वाला अनुपम प्रभाव दर्शाया गया है।

कला पक्ष:

1. ब्रज भाषा का सहज एवं सरल प्रयोग किया गया है।
2. 'मयूर मृग', 'दीर्घ-दाघ' में अनुप्रास अलंकार है।
3. इसमें दोहा छंद का प्रयोग किया गया है।

3.

बतरस-लालच लाल की मुरली धी लुकाइ।

सौंह करै भौंहनु हँसै, दैन कहैं नटि जाइ॥

शब्दार्थ: बतरस = बात करने का रस (आनंद) (बतरस = बत + रस), लाल = कृष्ण, मुरली = बाँसुरी, धी = रखना, लुकाइ = छिपा दी, सौंह = सौगंध, भौंहनु = भौंहों से, दैन कहैं = देने के लिए कहना, नटि जाइ = मना कर देती हैं।

व्याख्या: बिहारी जी कहते हैं कि राधा ने श्रीकृष्ण से बात करने के लालच में उनकी मुरली छिपा कर रख दी है। जब श्रीकृष्ण राधा से अपनी बाँसुरी वापस माँगते हैं, तब वे सौगंध खाकर कहती हैं कि बाँसुरी उनके पास नहीं है। जब श्रीकृष्ण उनकी बात पर विश्वास कर लेते हैं, तब राधा भौंहों के माध्यम से हँस पड़ती हैं। उनकी यह हँसी कृष्ण को बता देती है कि बाँसुरी उनके ही पास है। इस प्रकार राधा श्रीकृष्ण से बातचीत का अवसर निकाल ही लेती हैं अर्थात् राधा श्रीकृष्ण से बातचीत का अवसर पाने के लिए बाँसुरी रूपी व्यवधान को हटा देती हैं।

काव्य-सौंदर्य:

भाव पक्ष:

1. कृष्ण के प्रति राधा की प्रीति परिलक्षित हो रही है।
2. राधा का मुरली के प्रति ईर्ष्या भाव स्पष्ट दृष्टिगोचर होता है।

कला पक्ष:

1. ब्रज भाषा का प्रयोग किया गया है और यह भावाभिव्यक्ति में सक्षम है।
2. 'लालच लाल' में अनुप्रास अलंकार हैं।
3. दोहा छंद का प्रयोग किया गया है।
4. 'लुकाइ' और 'जाइ' तुकांत पद हैं।

4.

कहत, नटत, रीझत, खिझत, मिलत, खिलत, लजियात।
भरे भौन मैं करत हैं नैननु हीं सब बाता॥

शब्दार्थ: कहत = कहना, नटत = इंकार करना, रीझत = रीझना ; प्रसन्न होना, खिझत = खीजना, मिलत = मिलना, खिलत = खिल जाना, लजियात = शर्माना, भौन = भवन, नैननु = नेत्रों में।

व्याख्या: नायिका परिवार के सदस्यों के साथ घर में बैठी है। उसी समय नायक आकर दरवाजे से ही प्रेम भरा संकेत करता है। संकेत पाकर नायिका इनकार कर देती है। उसकी इस अदा पर नायक रीझ (प्रसन्न) जाता है। नायिका उस पर खीज जाती है। फिर नेत्रों के मिलन से नायिका का चेहरा खिल जाता है तथा नायिका लजा जाती है। इस प्रकार वे दोनों भरे हुए घर में नैनो के संकेत द्वारा बातचीत करते हैं।

काव्य-सौंदर्य:

भाव पक्ष:

1. नायक-नायिका के प्रेम का सूक्ष्म चित्रण किया गया है।
2. प्रेम की अवस्थाओं का भी वर्णन किया गया है।

कला पक्ष:

1. ब्रज भाषा का प्रयोग किया गया है तथा भाषा प्रभावोत्पादक है।
2. 'भरे भौन' में अनुप्रास अलंकार है।
3. इसमें शृंगार रस की प्रधानता है।
4. दोहा छंद का प्रयोग किया गया है तथा प्रथम पंक्ति में ध्वन्यात्मकता है।

5.

बैठि रही अति सघन बन, पैठि सदन-तन माँह।
देखि दुपहरी जेठ की छाँहीं चाहति छाँह॥

शब्दार्थ : बैठि = बैठे ना, अति = अत्यधिक, सघन = घनी, बन = वन, पैठि = छिपकर, सदन-तन = भवन में, घर में, देखि = देखकर, दुपहरी = दोपहर, जेठ = जेठ का महीना, छाँहों = छाया।

व्याख्या: नायिका जेठ मास की गर्मी में अपने घर में ही छिपकर बैठी रहती है। ऐसे मौसम में उसका मन सघन वन में छिपकर बैठने को करता है क्योंकि वहाँ वृक्षों और लताओं के सघन होने के कारण गर्मी कम लगती है। जेठ मास की दोपहरी में तो वृक्ष की छाया भी छाया की इच्छा करने लगती है। अर्थात् जेठ मास की गर्मी प्राणियों के साथ-साथ प्रकृति को भी दग्ध कर देती है।

काव्य-सौंदर्य:

भाव पक्ष:

1. इसमें जेठ मास की गर्मी का जीवंत वर्णन किया गया है।
2. गर्मी की भीषणता पर प्रकाश डाला गया है।

कला पक्ष:

1. ब्रज भाषा का प्रयोग किया गया है।
2. भाषा सहज-सरल होने के साथ-साथ प्रभावोत्पादक है।
3. 'देखि दुपहरी' में अनुप्रास अलंकार है।
4. 'सदन-तन' में रूपक अलंकार है।
5. दोहा छंद का प्रयोग हुआ है तथा 'माँह छाँह' तुकांत पद हैं।

6.

कागद पर लिखत न बनत, कहत सँदेसु लजात।

कहिहै सबु तेरो हियौ, मेरे हिय की बाता।

शब्दार्थ: कागद = कागज, लिखत = लिखना, सँदेसु = संदेश, लजात = लज्जा लगती है, तेरो = तुम्हारा, हियौ = हृदय (मन)।

व्याख्या: नायिका नायक को अपनी विरहावस्था का वर्णन करती हुई कहती है कि प्रेम-संदेश मुझसे कागज पर लिखा नहीं जाता और संदेश कहने में या फिर किसी दूती के द्वारा भेजने में भी लज्जा की अनुभूति होती है अर्थात् नारी सुलभ लज्जा गुण के कारण मैं अपना संदेश लिखने में या फिर दूती के माध्यम से भेजने में असमर्थ हूँ। प्रेम तो वैसे भी हृदय का विषय है। इसका वर्णन मुख द्वारा नहीं किया जा सकता। अतः तुम्हारा हृदय मेरे हृदय की सब बातों को पढ़ लेगा अर्थात् प्रेम की तीव्रता होने पर प्रेमी एकचित्त हो जाते हैं और वे एक-दूसरे के मन की बात स्वयं ही जान जाते हैं।

काव्य-सौंदर्य:

भाव पक्षः

1. इसमें विरहावस्था की आवुफलता का जीवंत वर्णन हुआ है।
2. विरहिणी नायिका की मनोव्यथा का सुंदर चित्राण किया गया है।

कला पक्षः

1. ब्रज भाषा का प्रयोग किया गया है। भाषा प्रभावोत्पादक है।
2. द्वितीय पंक्ति में अतिशयोक्ति अलंकार है।
3. इसमें वियागे शृंगार रस का सुंदर एवं स्वाभाविक चित्राण हुआ है।
4. दोहा छंद का प्रयोग किया गया है।

7.

प्रगट भए द्विजराज-कुल, सुबस बसे ब्रज आइ।

मेरे हरौ कलेस सब, केसव केसवराइ॥

शब्दार्थः प्रगट भए = प्रकट होना, द्विजराज = ब्राह्मण, चंद्रमा, वुफल = वंश, सुबस = अपनी इच्छा से, बसे = बसना, आइ = आकर, हरौ = दूर करो, कलेस = पीड़ा (दुःख), केसव = श्रीकृष्ण

व्याख्या: बिहारी लाल अपना परिचय देते हुए कहते हैं कि वे ब्राह्मण कुल में उत्पन्न हुए और अपनी इच्छा से बज्र में आकर बस गए। हे कृष्ण! आप तो केशव हैं और पिता भी केशवराय थे। अतः आप मेरे सभी क्लेश (पीड़ाओं) को हर लीजिए अर्थात् दूर कीजिए।

काव्य सौंदर्यः

भाव पक्षः

1. बिहारी जी स्वयं अपना परिचय दे रहे हैं।
2. कवि श्रीकृष्ण जी से अपनी पीड़ा हरने के लिए प्रार्थना कर रहे हैं।

कला पक्षः

1. ब्रज भाषा का प्रयोग किया गया है तथा वह भावाभिव्यक्ति में सफल है।
2. 'बसे ब्रज' में अनुप्रास अलंकार है।
3. 'केसव केसवराइ' में यमक अलंकार है।
4. दोहा छंद का प्रयोग किया गया है।
5. आइ केसवराइ तुकांत पद हैं।

8.

जपमाला, छापैं, तिलक सै न एकौ कामु।

मन-काँचै नाचै बृथा, साँचै राँचै रामु॥

शब्दार्थ: जपमाला = भगवान का नाम जपने की माला, छापैं = छापना, अंकित करना, तिलक = टीका (मस्तक पर लगाने वाला तिलक), सै न = सिद्ध न होना, एकौ = एक भी, कामु = काम, मन, नाचै = नाचना, काँचै = कच्चा, बृथा = बेकार, साँचै = सच्चा, राँचै = प्रसन्न होना (रीझना), रामु = भगवान राम, ईश्वर।

व्याख्या: कवि मनुष्य को शिक्षा देते हुए कहते हैं कि ईश्वर प्राप्ति के लिए किए जाने वाले विभिन्न क्रियाकलाप यथा माला जपना, ईश्वर का नाम शरीर पर अंकित करना और मस्तक पर तिलक धरण करना, सब व्यर्थ हैं। इन बाह्य आडंबरों को करने से कोई भी कार्य सिद्ध नहीं होगा। वास्तव में, जब तक तुम्हारा मन सांसारिक कर्मों के वशीभूत होकर इधर- उधर भटकता रहेगा, तब तक तुम्हारे हृदय में प्रभु का वास नहीं होगा और तब तक सारे बाहरी आडंबर व्यर्थ हैं। सच्चे मन से ईश्वर भक्ति करने पर ही भगवान राम रीझते (प्रसन्न) हैं।

काव्य-सौंदर्य:

भाव पक्ष:

1. कवि बाह्य आडंबरों का खंडन कर रहा है।
2. सच्ची भक्ति से ही ईश्वर-प्राप्ति संभव है। यह तथ्य उजागर किया गया है।

कला पक्ष:

1. ब्रज भाषा का सहज एवं सरल प्रयोग किया गया है।
2. 'राँचै रामु' में अनुप्रास अलंकार है।
3. दोहा छंद का प्रयोग हुआ है।
4. कामु, रामु तुकांत पद हैं।

कवि परिचय

बिहारी

इनका जन्म 1595 में ग्वालियर में हुआ था। सात-आठ वर्ष की उम्र में ही इनके पिता ओरछा चले गए जहाँ इन्होंने आचार्य केशवदास से काव्य शिक्षा पायी। यहीं बिहारी रहीम के संपर्क में आये। बिहारी ने अपने जीवन के कुछ वर्ष जयपुर में भी बिताये। ये रसिक जीव थे पर इनकी रसिकता नागरिक जीवन की रसिकता थी। इनका स्वभाव विनोदी और व्यंग्यप्रिय था। इनकी एक रचना 'सतसई' उपलब्ध है जिसमें करीब 700 दोहे संगृहीत हैं। 1663 में इनका देहावसान हुआ।

बिहारी के दोहों का सार (प्रतिपाद्य)

पहले दोहे में बिहारी लाल श्रीकृष्ण के तन पर ओढ़े हुए पीत वस्त्रा की तुलना नीलमणि शैल पर पड़ने वाली सूर्य की आभा से कर रहे हैं।

दूसरे दोहे में गर्मी की भीषणता का वर्णन करते हुए वे कहते हैं कि गर्मी की अधिकता के कारण शत्रु भी मित्र बन गए हैं।

तीसरे दोहे में गोपियों द्वारा कृष्ण की मुरली छिपा देने की चर्चा की गई है ताकि इस बहाने वे श्रीकृष्ण से बातचीत कर सकें।

चौथे दोहे के माध्यम से कवि नायक-नायिका के संकेतों द्वारा बातचीत की चर्चा कर रहे हैं। साथ ही साथ उन्होंने दोनों के हाव-भाव का भी जीवंत चित्रण किया है।

पाँचवें दोहे में जेठ माह की भीषण गर्मी का चित्रण किया गया है। यह गर्मी इतनी प्रचंड है कि छाया भी छाया की इच्छा करने लगती है।

छठे दोहे में कवि हृदय की बात हृदय से ही कर लेने का सुझाव देते हैं। वे कहते हैं कि कागज पर लिखने तथा दूती द्वारा संदेश भेजने में लज्जा आती है। हृदय ही हृदय की आवाज सुन सकता है।

सातवें दोहे में कवि ने अपने पिता श्री केशवराय और भगवान कृष्ण को एक साथ अपना संरक्षक मानते हुए उनका आशीर्वाद चाहा है।

आठवें दोहे में कवि प्रभु-प्राप्ति के लिए बाहरी दिखावे छोड़कर सच्ची भक्ति अपनाने पर बल देते हैं।

इस प्रकार बिहारी जी के दोहे जीवन के प्रत्येक प्रसंग को सूक्ष्मता से कह जाते हैं। ये पाठक के हृदय पर अमिट छाप छोड़ते हैं।